किरण बाला

जल संरक्षण एवं प्रबन्धन में तालाबों की महत्ता

यदि तालाब सूखे पड़े रहें तो पेयजल का संकट और गहरा सकता है। तालाब से ही भूमिगत जल स्त्रोतों में पानी की आवक होती है। कुएं और ट्यूबवेल में तभी तक पानी आता है जब तक तालाब में पानी होता है। एक तालाब अपने आसपास के कई किलोमीटर क्षेत्र में भूमिगत जलस्त्रोतों का पोषण करता है। इससे पेयजल व्यवस्था सुगम और सुचारू हो सकती है। वर्षा के जल अथवा झरने के पानी को रोककर रखे जाने हेतु तालाबों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। अन्यथा वर्षा के दिनों में झरने आदि का पानी व्यर्थ में बह जाता है।

पानी मानव की ही नहीं, प्रत्येक प्राणी की आवश्यकता है। इसके बगैर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति बड़ी दयालु है जो हर वर्ष वर्षा के मौसम में नदी, नाले, तालाब, झील आदि को पानी से लबालब भर देती है। यदि हम इनमें एकत्र जल को संजोकर रख सकें, तो यह आने वाले जलसंकट से मुक्ति दिला सकता है।

तालाब न केवल इंसान की प्यास बुझाते हैं अपितु पशु-पक्षी भी यहां आकर पानी पीते हैं, इसलिए यह जीवनदायी है। इसके अलावा, किसान अपने खेतों की सिंचाई भी इससे करते हैं। अन्यथा खेत सूखे रह जाएं। तालाबों की बदौलत ही खेत और फसल लहलहा उठती है। आज भी बहुसंख्यक किसान सिंचाई के लिए तालाबों पर ही निर्भर हैं।

यदि तालाब सूखे पड़े रहें तो पेयजल का संकट और गहरा सकता है। तालाब से ही भूमिगत जल स्त्रोतों में पानी की आवक होती है। कुएं और ट्यूबवेल में तभी तक पानी आता है जब तक तालाब में पानी होता है। एक तालाब अपने आसपास के कई किलोमीटर क्षेत्र में भूमिगत जलस्त्रोतों का पोषण करता है। इससे पेयजल व्यवस्था सुगम और सुचारू हो सकती है।

वर्षा के जल अथवा झरने के पानी को रोककर रखे जाने हेतु तालाबों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। अन्यथा वर्षा के दिनों में झरने आदि का पानी व्यर्थ में बह जाता है।

तालाबों द्वारा सिंचाई करने के कई लाभ हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वर्षा के पानी का उचित उपयोग होता है यानी वह बेकार नहीं जाता। जिन पहाड़ी भागों में कुएं नहीं खुद सकते, वहां तो ये सिंचाई का सर्वोत्तम साधन होते हैं।

तालाब में मछली पालन भी बड़ी आसानी से किया जा सकता है। इससे एक हद तक खाद्य सामग्री भी उपलब्ध हो सकती है तथा लोगों को रोजगार भी मिल सकता है।

तालाब का निर्माण प्राकृतिक रूप से भी होता है अथवा मानव द्वारा भी उसको बनाया जाता है। निचले इलाके की जमीन पर पानी भर जाने से वहां तालाब स्वतः निर्मित हो जाते हैं।

मानव निर्मित तालाबों को कृत्रिम तालाब कहा जाता है। ये कच्चे और पक्के दोनों प्रकार के हो सकते हैं। आमतौर पर ये सतह से नीचे होते हैं, लेकिन इन्हें सतह के ऊपर भी बनाया जा सकता है।

रिसन तालाब उन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हैं, जहां कम गहराई की मिट्टी

तालाब सिचाई का सर्वोत्तम साधन है

होती है। इसमें वर्षा का जल रिस-रिस कर कुछ ही समय में जमीन की निचली सतहों में चला जाता है। इस तरह के तालाबों से भूमिगत जल भंडार समूह होते हैं।

तालाब दो तरह के बनाए जाते हैं-जल संग्रहण तालाब तथा रिसन तालाब। जलभरण तालाब में पानी अधिक समय तक भरा रहता है जिसका इस्तेमाल सिंचाई, पशुओं के पीने आदि में किया जाता है। ऐसे तालाब चिकनी, अपारगम्य मिट्टी वाले क्षेत्रों में बनाए जा सकते हैं। इसका पानी निचली सतहों में रिसकर जाने की आशंका कम रहती है।

मानव निर्मित तालाब आमतौर पर समतल क्षेत्रों में होते हैं। इसके लिए सबसे निचले हिस्से का चयन किया जाता है। तालाब की सीमा रेखा का निर्धारण करके उसे खोदा जाता है। खुदाई के दौरान निकली मिट्टी को तालाब के चारों तरफ एक मजबूत मेंड़ के रूप में जमाकर रोलर द्वारा ठीक से दबा दिया जाता है।

जब से लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए तालाबों को पाटना शुरू किया, तालाबों के बुरे दिन शुरू हो गए और वे मैदान बनते चले गए। इसके अलावा, तालाबों के आसपास अतिक्रमण हो रहा है। भू-माफिया वहां नई-नई कॉलोनियां बना रहे हैं तथा तालाबों में पानी की आवक के स्त्रोतों को बंद कर देते हैं। ऐसे में तालाब पूरी तरह भर नहीं पाता और समय से पूर्व सूख जाता है।

यदि तालाब का खुली सतह का क्षेत्रफल अधिक है, तो पानी के भाप बनकर उड़ने की संभावना अधिक रहती है। लेकिन उसकी लंबाई, चौड़ाई या गोलाई को कम रखते हुए गहराई बढ़ा दी जाए, तो न केवल जल संग्रहण अधिक मात्रा में होगा अपितु उसके भाप बनकर उड़ने की मात्रा में भी कमी आती है और पानी काफी लंबे समय तक बना रहता है।

तालाब निर्मित करते समय यदि कुछ बातों का ध्यान रखा जाए, तो उसका निर्माण सार्थक होता है अन्यथा लागत तो बहुत आ जाती है साथ ही वांछित परिणाम भी नहीं निकलते। कुछ तकनीकी पहलू ऐसे हैं जिन पर तालाब निर्माण के दौरान ध्यान देना जरूरी है। जिस क्षेत्र में तालाब निर्माण किया जाना हो, उसमें जल संचयन की क्षमता वहां की अधिकतम वर्षा गति और मात्रा से दोगुना रखी जानी चाहिए। इससे तालाब फूटने की आशंका नहीं रहती। इसी प्रकार, तालाब से जल निकास की गति को धीमा करने के लिए तालाब का जल निर्गम मार्ग गोलाई में घुमावदार बनाना चाहिए। कटाव को रोकने के लिए पिचिंग लगाना चाहिए।

नए तालाब बनाते समय उस स्थान को प्राथमिकता देनी चाहिए जो निचले स्तर पर हो तथा पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक रूप से पानी भरता हो।

तालाब बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह बीच में गहरा तथा किनारों पर उथला हो। इससे आगम मार्ग में जल की गति धीमी होने से किनारों का कटाव नहीं होता।

तालाब की जल संग्रहण की क्षमता में कमी नहीं आए, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। जैसे तालाब में पानी आने के मार्ग में बालू रेत, गोल बजरी, बारीक गिट्टी, मोटी गिट्टी तथा बोल्डर की परतों को लगा देना चाहिए। इससे तालाब में मिट्टी आने से रोक लगेगी। इसी तरह, पानी के बाहर निकलने के मार्ग पर भी रिवर्स फिल्टर लगा देने चाहिए।

तालाबों की महत्ता प्राचीनकाल से ही रही है। पुरातत्वविदों के अनुसार, रामायण और महाभारत काल में तालाबों का बोलबाला था। यही नहीं, मत्स्यपुराण में तो इसकी महत्ता बताते हुए लिखा गया है कि दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब।

वैसे तो तालाबों से सिंचाई संपूर्ण भारत में होती है, लेकिन पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि में यह सिंचाई का प्रमुख साधन है। यदि संपूर्ण देश की बात करें तो कुल सिंचित क्षेत्र का लगभग 5 प्रतिशत तालाबों से ही सींचा जाता है।

राजस्थान में तो अनेक प्रसिद्ध तालाब हैं जिनमें पद्म तालाब, मिलिक तालाब, मानसरोवर तालाब आदि प्रमुख हैं। अवर्षा की स्थिति में ये तालाब भी सूख जाते हैं।

कुछ शहरों की पहचान ही वहां के तालाबों से है। जैसे भोपाल तालाबों का शहर कहा जाता है।

भारत तालाबों की परंपरा वाला देश है जहां सदियों पहले तालाब पाए जाते थे। लेकिन आज हम इसकी महत्ता को भुला चुके हैं। यही कारण है कि देश के अधिकांश तालाबों की सुध लेने वाला कोई नहीं है।

आज तालाब प्रदूषित हो रहे हैं। लोग इसे प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। धोबी वहां कपड़े धोते हैं, लोग वहां स्नान करते हैं, पशुपालक अपने पशुओं को वहां नहलाते हैं, आगंतुक वहां तरह-तरह का कचरा डाल देते हैं जिसमें कागज, प्लास्टिक की थैलियां आदि प्रमुख हैं। कुछ लोग धर्म की आड़ में तालाबों को प्रदूषित करते हैं, जैसे मूर्तियों का विसर्जन, पूजन सामग्री डालना आदि। इनसे तालाबों में गंदगी होती है।

वर्षा जल को तालाबों के माध्यम से सहेजने के ठोस प्रयास करने होंगे। अभी जो प्रयास हो रहे हैं वे महज कागजी खानापूर्ति हैं, इससे अधिक और कुछ नहीं। यही कारण है कि तालाबों में पानी का नामोनिशान नहीं है।

समय की आवश्यकता को देखते हुए न केवल नए तालाब बनाना जरूरी है अपितु पुराने और अनुपयोगी तालाबों का भी सीमांकन, गहरीकरण तथा जीर्णोद्धार करना जरूरी है। पुराने तालाबों का अस्तित्व फिर से लाना होगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में जनभागीदारी समितियों की तालाब निर्माण और

मानव द्वारा निर्मित तालाब का दृश्य

पुराने तालाबों को पुनः अस्तित्व में लाने के लिए जीर्णोद्धार की आवश्यकता है

रखरखाव में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। पंचायतों में सक्रियता, शासन का सहयोग और जनभागीदारी से मृतप्रायः तालाबों का कायाकल्प किया जा सकता है।

बिन पानी सब सून की कहावत देश के अधिकांश गांवों और कस्बों में लागू होती है जिसका मुख्य कारण बेहतर जलप्रबंधन नहीं होना है। यद्यपि तालाब है, लेकिन उनमें से ज्यादातर काम के नहीं हैं। तालाबों का पुनरूद्धार करने की योजना नहीं होने से वे बेकार साबित हो गये।

जब से लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए तालाबों को पाटना शुरू किया, तालाबों के बुरे दिन शुरू हो गए और वे मैदान बनते चले गए। इसके अलावा, तालाबों के आसपास अतिक्रमण हो रहा है। भू-माफिया वहां नई-नई कॉलोनियां बना रहे हैं तथा तालाबों में पानी की आवक के स्त्रोतों को बंद कर देते हैं। ऐसे में तालाब पूरी तरह भर नहीं पाता और समय से पूर्व सूख जाता है। यह सब शासन-प्रशासन और प्रभावशाली नेताओं की मिलीभगत से होता है। इंसानी स्वार्थ इतना हावी हो जाता है कि जनहित की बलि दे दी जाती है।

सरकार को चाहिए कि वे नए-नए तालाबों का निर्माण कराए तथा पहले से निर्मित तालाबों का गहरीकरण और चौड़ीकरण कराए। जब तालाब की गहराई और चौड़ाई बढ़ेगी, तो उसमें जल संग्रहण की क्षमता बढ़ेगी। परिणामस्वरूप वर्षभर पानी बना रहेगा।

खेती किसान की जान है, लेकिन जब पानी ही नहीं होगा तो उसकी जान कैसे बचेगी? जब पानी नहीं होगा तो उपज कहां से पैदा होगी? जब उपज नहीं होगी तो वह क्या बेचेगा, क्या खाएगा ओर कहां से कर्जा चुकाएगा? आजकल किसानों द्वारा आत्महत्याएं करने के प्रकरण बढ़ते जा रहे हैं। यदि तालाब होते तो उसकी फसल लहलहा उठती। ऐसे में वह क्योंकर खुदकुशी करता या क्यों सड़कों पर आकर उग्र आंदोलन करता? इसलिए भी तालाबों का महत्व स्वीकारना होगा।

सच तो यह है कि तालाब एक महत्वपूर्ण और मूल्यवान आर्थिक संपत्ति है जिस पर देश की कृषि और आर्थिक विकास निर्भर है। इनसे संपूर्ण जीवमंडलीय पारिस्थितिकी तंत्र नियंत्रित होता है। तालाब का जल न केवल मनुष्यों और अन्य जीवों के लिए आवश्यक है, वरन् वनस्पतियों, कृषि, उद्योग, परिवहन एवं ऊर्जा उत्पादन के लिए भी जरूरी है।

प्राचीनकाल से ही लोग नदी या तालाब किनारे बस्ती का निर्माण तथा खेती करते थे। तालाब के आसपास की जमीन अधिक उपजाऊ मानी जाती है। इससे न केवल कृषि उत्पादन ही बढ़ता था अपितु वर्ष में एक से अधिक फसलें लेना भी संभव होता था। आज भी तालाब से लगे खेत अधिक फसल देते हैं और फिर सिंचाई के लिए तालाब का जल भी सुगम रहता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की अधिकांश जनसंख्या गांवों में रहती है तथा खेती करती है। कृषि देश की रीढ़ है और जीविकोपार्जन का मुख्य साधन भी। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि कृषि मानसून पर निर्भर रहती है। इसलिए यह एक प्रकार का जुआ है। लेकिन यदि हम तालाबों की महत्ता को स्वीकारें और उनके अनुरूप रणनीति बनाएं, तो कृषि की वर्षा पर निर्भरता में थोड़ी कमी आ सकती है।

यदि कृषि में तालाबों द्वारा सिंचाई को प्राथमिकता दी जाती है तो इससे न केवल कृषि उत्पादन बढ़ेगा अपितु हम कृषि उपजों का निर्यात भी कर सकेंगे। यही नहीं, अनाज के आयात में कमी भी आएगी। खाद्यान्नों की पूर्ति बढ़ने से देश की खाद्य समस्या भी हल हो सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन भी एक मुख्य व्यवसाय के रूप में अपनाया गया है। पशुओं को भी जिंदा रहने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। यदि तालाबों में लबालब पानी भरा हो तो पशुओं को राहत मिल सकती है।

पशुओं को खाने के लिए चारा चाहिए होता है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में तालाब हों तो उसके आसपास की भूमि में नमी बनी रहती है जिससे चारा उग सकता है और इस तरह चारे की समस्या समाप्त हो सकती है।

भारतीय कृषि आज भी परंपरागत तकनीक से की जा रही है जिसमें तालाबों का अपना महत्व है। परंपरागत खेती में तालाबों से सिंचाई की जाती है। वैसे भी अधिकांश किसान छोटी जोतवाले हैं जिनके पास सिंचाई के अपने निजी स्रोत नहीं हैं। ऐसे में तालाबों पर उनकी निर्भरता बढ़ जाती है।

हमारे देश में कृषि की निम्न उत्पादकता इसीलिए है क्योंकि सिंचाई के पर्याप्त साधन नहीं हैं। यदि तालाबों का इस्तेमाल सिंचाई के साधन के रूप में व्यापकता से किया जाए, तो इससे काफी हद तक उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

सिंचाई के अभाव में किसान वर्ष में एक ही फसल ले पाता है। यदि तालाबों के माध्यम से सिंचाई की जाए तो एक ही वर्ष में कई फसलें ली जा सकती हैं। गौरतलब है कि भारत में केवल 45 प्रतिशत कृषि भूमि को ही सिंचाई की सुविधाएं मिल पाती हैं। शेष मानसून पर निर्भर हैं।

वर्षों पूर्व देश में हरित क्रांति का नारा दिया गया था, लेकिन इसके वांछित परिणाम देखने को नहीं मिले। जानते हैं क्यों? क्योंकि हमने सिंचाई को एक साधन के रूप में तालाबों की महत्ता को नहीं स्वीकारा। जब इसके वांछित परिणाम नहीं मिले तब इस गलती की तरफ ध्यान दिया गया और तालाब निर्माण हेतु योजनाएं बनने लगी। देश में 1951 में कुल सिंचित क्षेत्र 209 लाख हेक्टेयर था जो 2016 में बढ़कर 63 मिलियन हेक्टेयर हो गया। इसी से बहुफसल लेना संभव हुआ है।

नहरें भी सिंचाई का मुख्य साधन हैं। देश में करीब 16.4 मिलियन हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाती है जो कुल सिंचित क्षेत्र की 34.2 प्रतिशत है। हमारे देश में तीन प्रकार की नहरें पाई जाती हैं-बारहमासी, बरसाती तथा स्टोरेज वर्क्स नहरें।

तालाबों की महत्ता इसलिए भी है कि देश में वर्षा की अनिश्चितता है। वह अनियमित और असामायिक भी है। इसके अलावा, वर्षा की प्रकृति मौसमी है। जुलाई से सितम्बर के बीच होने वाली वर्षा से खरीफ की फसल तो तैयार हो सकती है, लेकिन बाद की फसलों के लिए तो पानी चाहिए ही, जो तालाबों से आसानी से मिल सकता है। कुछ फसलों में अधिक पानी की जरूरत होती है। ऐसे में तालाबों की उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता है।

तालाब निर्माण में लोगों को रोजगार भी मिलता है। तालाब को बनाने, उसे चौड़ा या गहरा करने के लिए मजदूरों की जरूरत होती है, अतः लोगों को अतिरिक्त रोजगार उपलब्ध हो सकता है। वैसे भी भारतीय कृषि करीब 55 प्रतिशत जनसंख्या को प्रत्यक्ष रूप से तथा इसके अलावा, अप्रत्यक्ष रूप से भी लोगों को रोजगार प्रदान

करती है। जब तालाब निर्माण में मजदूरों को रोजगार मिलेगा तो उनकी आमदनी बढ़ेगी और उनका जीवन स्तर भी बढ़ेगा।

तालाब में मछली पालन को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे मछलियों का उत्पादन भी बढ़ेगा। मछुआरे अपना जाल डालकर मछलियां पकड़ कर उन्हें बाजार में बेच सकते हैं। यदि शासन या स्थानीय निकाय मछली पालन को ठेके से देता है, तो इससे उसे भी आमदनी होगी। इस तरह से तालाबों का राजस्व में भी योगदान हो सकता है।

तालाब यदि गहरा, चौड़ा और आकार में बड़ा हो तो उस स्थान को पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित किया जा सकता है। नाव, बोट, स्टीमर आदि चलाए जा सकते हैं, जिसमें बैठकर पर्यटक पानी में सैर करने का आनंद ले सकते हैं। यदि ऐसा होता है, तो नाव, बोट, स्टीमर आदि के निर्माण और संचालन में भी लोगों को रोजगार मिलेगा। इसके अलावा, लोगों का मनोरंजन भी होगा।

तालाबों को यदि सार्वजनिक मनोरंजन स्थल के रूप में निश्चित किया जाए तो वहां बगीचे बच्चों के लिए खेलने-कूदने और मनोरंजन के साधन विकसित किए जा सकते हैं। सुबह-शाम लोग घूमने और मनोरंजन करने आ सकते हैं।

यदि तालाबों को मनोरंजन स्थल या पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित किया जाता है तो वहां सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध होने चाहिए ताकि दुर्घटना की कोई आशंका न रहे अन्यथा लोगों की अज्ञानता, नासमझी या लापरवाही से वे डूब भी सकते हैं।

गांव हो या शहर यदि बड़े और गहरे तालाब हो तो वे अपनी बस्ती की पेयजल व्यवस्था का समाधान बन सकते हैं। स्थानीय निकायों को तालाब जल प्रबंधन के लिए उचित रणनीति तैयार करनी चाहिए ताकि तालाबों का पानी आमजन को पेयजल के रूप से मुहैया कराया जा सके।

जल संरक्षण के लिए जरूरी है कि उपलब्ध वर्षा के जल का समुचित उपयोग किया जाए। तालाबों को गहरा कर सतही जल का संरक्षण हो सकता है।

बिन पानी सब सून, कहावत सोलह आने सच है। जल है तो कल है। तालाब है तो हम है अन्यथा न केवल पानी का संकट पैदा हो जाएगा अपितु सिंचाई की समस्या भी उत्पन्न हो जाएगी। इसलिए हमें तालाबों की उपयोगिता को समझना होगा और उनके संरक्षण के हर संभव प्रयास भी करने होंगे।

तालाबों में मछली उत्पादन जीविकापार्जन के लिए एक बेहतर विकल्प

तालाबों का गहरीकरण और चौड़ीकरण आज समय की मांग है क्योंकि जल की आवश्यकता विभिन्न जरूरतों के लिए वर्षभर होती है। यदि तालाब सूखे रहेंगे तो कुओं में जल कहां से आएगा? आसपास के खेत मैदान बन जाएंगे। पशु प्यासे मर जाएंगे और इंसान पानी की एक-एक बूंद के लिए हाहाकार करते नजर आएंगे।

जल के प्रत्येक साधन या स्रोत का अपना महत्व है। पानी के लिए कुओं का इस्तेमाल सदियों से होता आया है। ये कच्चे और पक्के दोनों हो सकते हैं। अधिकांश कुएं कच्चे हैं। नलकूप या ट्यूबवेल में बिजली या डीजल पंपों से पानी निकाला जाता है। अधिकांश कुएं किसानों के खेत में ही होते हैं। यदि आसपास तालाब हुआ तो कुओं में पानी की आवक निरंतर बनी रहती है।

बहुउद्देश्यीय नदी-घाटी योजनाओं का उद्देश्य नदी की घाटी में उपलब्ध सभी योग्य सुविधाओं का पूर्ण उपयोग करने से है। इससे सिंचाई सुविधाओं में सुधार और विस्तार होता है। बड़े जलाशय और बांध बनाने से पानी संग्रहण की क्षमता बढ़ती है।

गांवों में भूमि की कमी नहीं है। जरूरत उसका सही इस्तेमाल करने की है। यदि उपलब्ध जमीन में तालाबों का निर्माण किया जाए तो इससे काफी हद तक ग्रामीणों की समस्या दूर हो सकती है।

विडम्बना यह है कि अन्य देशों में जहां तालाब का महत्व समझा गया है और इसके लिए सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं, कृषि प्रधान देश में और जहां पेयजल का व्यापक संकट भी है, में इनके प्रति उपेक्षाभाव रखा जा रहा है। यह प्रवृत्ति ठीक नहीं है और इसके काफी दुष्परिणाम देखने को मिलेंगे।

हमारा भारत वार्षिक वर्षा से समृद्ध है। यहां समुचित मात्रा में वर्षा होती है लेकिन दुर्भाग्य से हम उसे सहेज कर नहीं रख पाते। यदि तालाबों का निर्माण, रखरखाव और विस्तार पर ध्यान दिया जाए तो प्रकृति के वरदान जल को हम रोके रखने में सफल हो सकते हैं।

पानी प्रकृति का सबसे अनमोल तोहफा है जो निःशुल्क प्राप्त होता है। सतही जल मनुष्यों और जीव जंतुओं के लिए तालाब में उपलब्ध रहता है जबकि भूमिगत नलकूपों के माध्यम से उपयोग में लाया जाता है लेकिन भूमिगत जल की मात्रा तभी बढ़ेगी जबकि तालाबों में पानी रूका रहेगा।

इसमें कोई दो राय नहीं कि समूचा देश जलसंकट से जूझ रहा है। ऐसे में पानी की एक-एक बूंद कीमती है तथा उसे बचाना होगा। इसके लिए तालाब से अच्छा और कौन सा साधन हो सकता है?

देश में जल संसाधनों के विकास हेतु केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें प्रयत्नशील हैं। जहां तक केन्द्र का प्रश्न है, उसने तीन संस्थाओं का गठन किया है जिनमें केन्द्रीय जल आयोग, केन्द्रीय भूजल बोर्ड तथा राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी शामिल हैं।

तालाबों में प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। तालाबों में जिन स्थानों पर बहता पानी आता है तो वहां की जमीन में मिली गंदगी और खनिज भी उसके साथ आ जाते हैं। यदि रास्ते की जमीन में आर्सेनिक, सीसा, कैडमियम तथा पारा होता हो तो वह जल को दूषित कर देता है। इसके अलावा मानव द्वारा तालाब किनारे शौच करना या पशुओं द्वारा मल मूत्र त्यागने से भी तालाब प्रदूषित हो जाते हैं।

मानव की विभिन्न गतिविधियों के फलस्वरूप तालाबों में अपशिष्ट पदार्थों के मिलने से भी प्रदूषण होता है।

तालाबों का स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रहना भी जरूरी है। जल-मल के उपचार की समुचित सुविधाएं सभी छोटे-बड़े शहर और गांवों में होनी चाहिए ताकि तालाब प्रदूषण मुक्त रहें। पेयजल के लिए बनाए गए तालाबों के चारों ओर दीवार या अन्य व्यवस्था स्थापित कर गंदगी के प्रवेश को रोका जाना चाहिए।

कुछ प्रजाति की विशेष मछलियों के अंडे, लार्वा तथा जातीय खरपतवार का भक्षण करते हैं। तालाबों में इन मछलियों को पालने से जल की स्वच्छता बनाए रखने में मदद मिलती है।

संपर्क करें:
किरण बाला
43/2, सुदामानगर, रामटेकरी,
मन्दसौर (म.प्र.) - 458 001
मो.नं. 09826042811
ईमेल : anucomputer@rediffmail.com